ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(7): 116-118
www.allresearchjournal.com
Received: 07-05-2021
Accepted: 09-06-2021

डॉ. मनीष पटेल
सहायक अध्यापक
डिपार्ट्मन्ट ऑफ
कम्पैरटिव लिटरेचर
वीर नर्मद साउथ गुजरात
यूनिवर्सिटी सूरत, गुजरात,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. मनीष पटेल
सहायक अध्यापक
डिपार्ट्मन्ट ऑफ
कम्पैरटिव लिटरेचर
वीर नर्मद साउथ गुजरात
यूनिवर्सिटी सूरत, गुजरात,
भारत

'भारतीय उपन्यासों में विषय वस्तुलक्षी तुलनात्मक अभ्यास'

डॉ. मनीष पटेल

प्रस्तावना

तुलनात्मक साहित्य विषयक शोध पत्र में भारतीय भाषाओं के तीन उपन्यास यहां लिए है। पहला उपन्यास उड़िया भाषा का कान्हुचरण महंती रचित सजा उपन्यास है। सजा उपन्यास में नारी का वास्तविक चित्रण हुआ है। कथा की नायिका धोबी और प्रेमी सनिया के प्रेम की और अकाल की पृष्ठभूमि इसकी कथा है। सजा उपन्यास का अनुवाद गीतांजलि पारिख ने किया है। सजा उपन्यास में लेखक ने खास करके पीडित समाज का सामाजिक सन्दर्भ प्रस्तुत किया है। प्राकृतिक विपदा के कारण अकाल की परिस्थिति निर्माण हुई, इससे बचने के लिए उन्होंने परम्परागत सामाजिक नियमों को तोड़ा, और बच गए उनको अपने ही समाज ने सजा देने का निर्णय किया। ये कथा की पृष्ठभूमि है। कथा के अंत में नारी को जो सहन करना पड़ता है। वहीं हमें कथा की नायिका धोबी में दिखाई देता है। कथा में सानिया और धोबी का प्रणय सामाजिक रूढ़ियों के कारण सफल नहीं हो पाता। बंगाली साहित्यकार शरद चन्द्र चट्टोपाध्याय की देवदास उपन्यास सोलह अध्यायों में विभाजित हुई है। उपन्यास में देवदास, पार्वती, और चंद्रमुखी के आस पास ये कथा घूमती है। देवदास और पार्वती बचपन में साथ ही बड़े हुए हैं। फिर भी दोनों में बहुत अंतर है। कथा में प्रणय चित्रण और सामाजिक बंधन का निरूपण हुआ है। गुजराती उपन्यासकार पन्नालाल पटेल का मलेलाजीव मे प्रेम है। पराक्रम है। मगर रोमांस दिखाई नहीं देता। कथा में ग्रामीण जीवन, ग्रामीण समाज का वास्तविक चित्रण हमें दिखाई देता है। कथा में सामाजिक चित्रण ज्यादा हुआ है। फिर भी हम इस उपन्यास को सामाजिक उपन्यास नहीं कह सकते हैं। लेखक ने मलेलाजीव में नायक कानजी और नायिका जीवी का मर्मस्पर्शी आलेखन किया है।

नायक कानजी और नायिका जीवी का प्रेम और संघर्ष की कथा है। 1941 में प्रगट हुई पन्नालाल पटेल की मलेलाजीव गुजराती साहित्य का एक महत्व का नया प्रस्थान लेकर आती है। इसी तरह शरदचन्द्र की देवदास उपन्यास 1917 में प्रगट हुई। उनका अनुवाद भोगीलाल गांधी ने किया है। ये दोनों उपन्यास की रचना के समय को देखें तो ये समकालीन उपन्यास है। ये वास्तववादी विचारधारा के समय की कृतियां हैं। पन्नालाल पटेल ने ग्राम्य जीवन के उपन्यास लिखे तो शरद बाबू के साहित्य में समाज की वास्तविक स्थिति और उसका स्वरूप, सच्चे मूल्य हमें दिखाई देते हैं। सजा उपन्यास 1953 में प्रगट हुई। उनका अनुवाद गीतांजलि पारिख ने किया। कथा में नारी को समाज द्वारा अपमानित कर त्याग, प्रतिव्रता, पितृभक्ति, वात्सल्य, ममता की मूर्ति दिखाकर नारी धर्म निभाया। लेखक के सृजन में ज़्यादातर सामाजिक और वास्तविक चेतना के संघर्षो के चित्र हमें उपन्यासों में दिखाई पड़ते हैं। इसी तरह ये तीनों सर्जक ने अपनी अपनी भाषाओं में अपनी अलग अलग पहचान बनाई हुई देखि जा सकती है।

मलेलाजीव, देवदास और सजा को साथ में रखकर देखा जाए तो, ये तीनों उपन्यास मे प्रणय जीवन का आलेखन हुआ है। तीनों उपन्यास की कथा देखें तो प्रणय सम्बन्ध पर ये उपन्यास आधारित है। तीनों में सुख-दुख और विरह की वेदना और प्रणयजीवन के आधार पर तीनों उपन्यासकारों ने सामाजिक कथा का भी ध्यान रखा है। मलेलाजीव गुजरात के छोटे से गांव को स्पर्शती कथा है। ये कथा जन्माष्टमी के मेले से शुरू होती है। और दूसरे साल मेले में ख़त्म होती है। देवदास उपन्यास में कथा का कथापाठ लम्बा है। कथा की शुरुआत वैभवी जीवन से शुरू होती है। अंत में देवदास करुण दरिद्रता से मौत को भेंटता है। सजा उपन्यास की शुरूआत अकाल से होती है। यह सामाजिक और प्राकृतिक संघर्ष के बीच नायिका और नायक आते हैं। अंत में नायिका का दर्द रूढ़िवादी समाज और रूढ़िगत वास्तविक समाज के सामने ज़ुक जाता है।

देवदास उपन्यास में देवदास, पार्वती और चंद्रमुखी का प्रणय त्रिकोण कथा मे आता है। पार्वती का पति खलनायक स्वभाव का नहीं है। मलेलाजीव में नायिका जीवी के साथ पति धुलो का व्यवहार है ऐसा व्याहर पार्वती के पति भुवन का नहीं है। पार्वती के पति को पार्वती का देवदास के साथ जो सम्बन्ध है। इसका विरोध पार्वती का पति भुवन नहीं करता। मलेलाजीव में धुलो कानजी और जीवी के प्रति विरोध की भावना से व्यवहार करता है। सजा में नायिका धोबी के पति की मृत्यु होने पर धोबी पुराने प्रेमी सानिया के प्रति आकर्षित होती है। सजा में व्यक्ति का विरोध नहीं है। वहा सामाजिक विरोध और ऊंच नीच के भेदभाव ज्यादा हैं। जाति प्रथा और सामाजिक भेदभाव के कारण धोबी की शादी सनिया से नहीं हो सकी।

सजा उपन्यास में बचपन से सनिया और धोबी एक दूसरे को पसंद करते थे। ऊंच नीच के कारण शादी नहीं हो पाई। बचपन में पार्वती और देवदास का प्रेम युवा अवस्था में परिपक्व होता है। दोनों एक दूसरे को समझते हैं। फिर भी सादी नहीं हो सकी। कानजी कनबी और जीवी धायन है। समाज में जाती के ऊंच नीच के भेदभाव के चलते उनका प्रेम सफल नहीं हो पाया। देवदास पार्वती को चाहता है। और चंद्रमुखी को भी चाहता है। सजा में सनिया धोबी को पसन्द करता है। मगर उपन्यास के अंत में पतिता कई को सानिया पत्नी बना लेता है। मलेलाजीव में कनजी दूसरी शादी नहीं करता। सजा में नायिका की सम्पत्ति के लिए नायिका के पिता जितोई सोई काका के लड़के को गोद लेने को कहते हैं। धोबी की मां विरोध करती है। आज विधवा है। मगर कल उसकी शादी हो सकती है। ऐसा विरोध धोबी की मां अपने पति के

सामने करती है। देवदास में पार्वती पति भुवन चौधरी को स्वीकार करती है। इनके दो बेटे को भी स्वीकार करती है। और पार्वती अपना जीवन दूसरों की सेवा में बिताती है। मलेलाजीव में ऐसी कोई परिस्थिति नहीं आती।

सजा और देवदास उपन्यास में स्त्री को केन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है। ये दोनों उपन्यास में नारी जीवन में कठोर यातना यातनाओं और दूसरे व्यक्ति के लिए जीवन समर्पित करने वाली नायिका के रूप में चित्रित हुआ है। कोई भी अपेक्षा यहां दिखाई नहीं देतीं। यहां भारतीय नारी का पूर्ण प्रेमरूप अति कठिन परिस्थिति में भी खिला हुआ दिखाई देता है। दोनों उपन्यासों में समाज जीवन के हरेक पहलू का सामना करती नाईका का चित्रण हुवा है। मलेलाजीव सजा और देवदास ये तीनों उपन्यास से मानवीय क्रूरता की कहानी है पार्वती भुवन के साथ जीवी धुला के साथ जीवन बिताती है। और धोबी अंत में मूक पत्थर जैसी बन जाती है।

मलेलाजीव में जीवि का पति मर जाता है। मगर जीवि को कोई फर्क नहीं पड़ता। पार्वती का पति जीवित रहता है। इसीलिए पार्वती की वेदना में भी कोई फर्क नहीं पड़ता। शास्त्री में धोबी विधवा है। इसी लिए वह मूक बनी हुई है। सनिया को देखते नई जिंदगी जीने की इच्छा हुई थी। ये तीनों उपन्यासों में वेदना के कारण भिन्न है। ये तीनों कथाएँ गुजराती, उड़िया, बंगाल की प्रसिद्ध उपन्यास है। सर्जक के लिए प्रेम वेदना मानवजीवन और प्रणय के शाश्वत मूल्य तिनों लेखकों ने अपनी कृति में परिस्थिति के अनुसार लिखे है। ये तीनों उपन्यास में प्रणय के अनेक स्तर हमें दिखाई देते हैं। कहीं मुग्धाअवस्था का प्रेम, तो कहीं किशोरावस्था का प्रेम, तो कहीं पुख्तावस्था, यहां दिखाई देता है। साथ में उनकी अभिव्यक्ति, आवेश, आवेग, गम्भीरता, गहनता, परिपक्वता और जुदाई हमें ये उपन्यासों में दिखाई देती है। यहा प्रेम की गति और प्रेम का व्यापक रूप निरूपित हुआ है।

सन्दर्भ सूची

1. धीरूभाई ठाकर गुजराती विश्वकोश खंड-ई
2. महंती कनहुचरण 'सजा' अनु.गीतांजलि परीख
3. धिरेन्द्र महेता गुजरती वेसवकोश खंड-15
4. पटेल पन्नलाल मलेलाजीव
5. रूपांतर अमृत गंगर